MASA-02

June - Examination 2018

M.A. (Previous) Sanskrit Examination

ललित साहित्य एवं नाटक

Paper - MASA-02

Time : 3 Hours] **[Max. Marks :- 80**

Note: The question paper is divided into three sections A, B and C. Write answers as per the given instructions.

निर्देश : यह प्रश्न पत्र 'अ', 'ब' और 'स' तीन खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

Section - A $8 \times 2 = 16$

(Very Short Answer Questions)

Note: Answer **all** questions. As per the nature of the question delimit your answer in one word, one sentence or maximum up to 30 words. Each question carries 2 marks.

खण्ड – 'अ'

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार एक शब्द, एक वाक्य या अधिकतम 30 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 2 अंकों का है।

1) (i) मालविकाग्निमित्रम् में कितने अंक हैं?

(ii) गंगा यमुना मिलन रघुवंशमहाकाव्य के किस सर्ग में वर्णित है?

(iii) उत्तरामचरितम् में तृतीय अंक किस नाम से जाना जाता है?

(iv) मेघदूतम् का जर्मन अनुवाद किस विद्वान द्वारा तथा कब किया गया?

(v) करूण रस के स्थायी भाव का नाम लिखिए।

(vi) मृच्छकटिकम् का क्या अर्थ है?

(vii) व्यभिचारी भाव कितने होते हैं?

(viii) भतृहरि के शतकत्रय कौन से हैं?

Section - B $4 \times 8 = 32$

(Short Answer Questions)

Note: Answer **any four** questions. Each answer should not exceed 200 words. Each question carries 8 marks.

खण्ड – ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 200 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 8 अंकों का है।

2) निम्न में से किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए।

धूमज्योतिसलिलमरूतां सन्निपातः क्व मेघः,
सन्देशार्था क्व पटुकरणैः प्राणिभिः प्रापणीया।
इत्यौत्सुक्यादपरिगणयन् गुह्यकस्तं ययाचे,
कामार्ता हि प्रकृतिकृपणा चेतनाचेतनेषु।।

अथवा

शून्यमपुत्रस्यगृहं चिरं शून्यं नास्ति यस्य सन्मित्रम्।
मूर्खस्य दिशः शून्याः सर्व शून्यं दरिद्रस्य।।

3) निम्न में से किसी एक श्लोक की सप्रसंग व्याख्या संस्कृत भाषा में कीजिए।

स्थित्वा तस्मिन् वनचरवधूभुक्तकुञ्जे मुहूर्तं
तोयोत्सर्गद्रु ततगतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां,
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य।।

अथवा

प्राप्यावन्तीनुदयनकथाकोविदग्रामवृद्धान्
पूर्वाद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम्।
स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानाम्,
शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम्।।

4) मुद्राराक्षसम् नाटक के नामकरण पर टिप्पणी कीजिए।

5) संस्कृत रूपक की प्रमुख विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

6) ''याच्ञा मोघावरमधिगुणे नाधमे लब्धकामा'' सूक्ति को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।

7) नाटक की अर्थप्रकृति का वर्णन कीजिए।

8) कालिदास के कालविषयक मतों का उल्लेख करते हुए गुप्त कालीन मत की समीक्षा कीजिए।

9) मृच्छकटिकम् नाटकानुसार ''रत्न रत्नेन सं गच्छते'' सूक्ति की व्याख्या कीजिए।

Section - C $2 \times 16 = 32$

(Long Answer Questions)

Note: Answer **any two** questions. You have to delimit your each answer maximum up to 500 words. Each question carries 16 marks.

खण्ड – स

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश : किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम 500 शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 16 अंकों का है।

10) गीतिकाव्य किसे कहते हैं? गीतिकाव्य की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

11) रूपक किसे कहते है? प्रमुख भेदों का वर्णन कीजिए।

12) मुद्राराक्षसम् नाटक की भाषा शैली का वर्णन कीजिए।

13) मृच्छकटिकम् के आधार पर वसन्त सेना का चरित्र चित्रण कीजिए।